

जिजीविषा

प्रवीण भट्ट 'यायावर'¹

जिजीविषाएं जीवित रखेंगी हमें,
हममें, हमारे आने वालों में,
विचार और सृजन से,
जब तक हम
नष्ट न हों
भौतिक रूप में.....
नष्ट होकर भी
अमर रहेंगी
हमारी जिजीविषा
हमारे विचारों में
वो हथियार बनेंगी
आने वालों के मस्तिष्कों का....

¹ सहायक प्राध्यापक, विभाग प्रभारी, हिन्दी विभाग, रामचंद्र उनियाल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उत्तरकाशी, उत्तराखंड, (भारत)